आओ हमारे साथ चलो!

चौरी-चौरा(गोरखपुर) से राजघाट(दिल्ली)

भारत का मतलब ?

भारत बनता है भा(प्रकाश स्रोत)+ रत(बने रहने के लिए) से। हमेशा अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ते रहने वाला देश है अपना।जब तक अपने भीतर की सांप्रदायिकता, डर, स्वार्थ, हिंसा और नफ़रत के अंधेरे से बाहर निकल कर पूरी हिम्मत से भाईचारा, प्रेम और अमन के लिए हम लड़ते रहेंगे तब तक भारत बना रहेगा। भारत सिर्फ काग़ज़ के टुकड़े पर बना हुआ नक़्शा नहीं है भारत एक ज़िंदा ख़ूबसूरत शय है जिसकी बुनियाद अहिंसा और प्रेम पर टिकी हुई है।

हमारे लिए लोकतंत्र क्या हैं ?

हम बस इतना चाहते हैं की दो जून की रोटी, शरीर ढंकने को कपड़े, सर पर छत, बच्चों की अच्छी पढ़ाई लिखाई हो। घर में कोई बीमार पड़ जाए तो पैसे की कमी से इलाज ना रुके। अपने मेहनत से परिवार की रोज़मर्रा की जरूरतों को बस पूरा कर लें, तो हमारे लिए लोकतंत्र, आज़ादी, सरकार, देश सब ठीक है। इन्हीं जरूरतों को पूरा करने के चक्कर में आदमी को यात्रा करने की ज़रूरत पड़ी तो ट्रेन, बस रोड बनाए गए। रोशनी चाहिए थी तो बिजली बनी। एक दूसरे तक सन्देश पहुंचाने के लिए चिट्ठी, फोन, मोबाइल और इंटरनेट बने। ये सभी चीजें ठीक से सब तक पहुँचे और किसी के साथ अन्याय न हो इसलिए सरकार बनाई गयी। ढेर सारे कामों को करने के लिए सरकार को खुली छूट चाहिए थी। तो असीमित अधिकार दिए गए। पैसो की जरूरत थी तो टैक्स जुटाया गया। बड़े कामों को करते हुए सरकार आम आदमी से बड़ी न हो जाए इसलिए संविधान निर्माताओं ने हर पाँच साल पर वोट से सरकार बदलने की ताक़त जनता के हाथों में दी। जनता के वोट से जनता के लिए काम करने की इस पूरी प्रक्रिया को लोकतंत्र कहा गया।

पर आज क्या हो रहा है ?

रोटी - कपड़ा - मकान, इलाज, शिक्षा और रोजगार आम आदमी की पहुंच से दूर हो रहा। गरीबी महंगाई लूट खसोट भ्रष्टाचार चरम पर है। चारों ओर अशांति का माहौल है। समाज सांप्रदायिक हो चला है। हम लगातार हिंदू-मुसलमान, दलित-सवर्ण, अगड़े-पिछड़े, भारत-पाकिस्तान में बँट रहे हैं।हमारी लड़ाई अब इन बाँटने वाली राजनीतिक ताक़तों और सरकारों से ही नहीं,बल्कि हमारे अपने भीतर की सांप्रदायिकता, डर, स्वार्थ और नफ़रत से भी है। क्योंकि भीतर के इन दुश्मनों से लड़े बिना अगर हम सिर्फ बाहर की लड़ाई लड़ेंगे, एक सरकार, नेता या राजनीतिक दल को उखाड़ फेंकने की बात करेंगे तो इनकी जगह कल कोई दूसरी सरकार, नेता या राजनीतिक दल ले लेगा। और हम बार-बार नए तरीके से लड़ाए जाते रहेंगे।

हमारा अतीत और "बापू" का रास्ता!

15 अगस्त 1947 के पहले अंग्रेजों की बड़ी ताक़त से लड़ने के लिए हम एकजुट हुए। भाषा, रहन- सहन, खान-पान ,जाती, धर्म अलग-अलग होने के बावजूद हम एक मुट्ठी बनकर लड़े। आपसी प्रेम और भाईचारे के इसी बुनियाद पर भारतीय लोकतंत्र की नींव पड़ी। सैकड़ों हजारों सालों में इस धरती पर अलग-अलग मत, विचारधारा,पूजा पद्धति के लोग एक दूसरे का सम्मान और संवाद करते हुए जो 'सह-जीवन' का मूल्य विकसित किये थे उसी सीमेंट ने आइडिया ऑफ़ इण्डिया के नींव में मजबूती प्रदान किया। प्रेम और सह-जीवन के आध्यात्मिक विज्ञान ने सच्चाई और ईमानदारी जैसे मूल्य दिए। इन्हीं मूल्यों को अभ्यास करके गाँधी ने सत्याग्रह का मंत्र दिया। आज़ादी की लड़ाई में इसी मंत्र ने लोगों को निर्भय बना दिया। अंग्रेजों की लाठी गोली बर्बरता और दमन के सामने निहत्थे भारतीय, तिरंगा थामे शांतिपूर्वक खड़े हो गए।

यात्रा से जुड़ने के लिये इस नम्बर पर मिस कॉल करें! 7428499810

नागरिक सत्याग्रह की ज़रूरत ?

हमारा सत्याग्रह अपने अंदर के झूठ डर और हिंसा के खिलाफ है। साथ ही हाल ही में उत्तर प्रदेश NRC CAA आंदोलन में आमजन के ऊपर हुए बर्बर जुल्म और दमन के खिलाफ भी है। सूबे में हुए आंदोलन में न सिर्फ 23 जानें गयी, बल्कि सैकड़ों लोग बुरी तरह से घायल भी हुए हैं। इस दमन ने पहले से कमजोर, डरे हुए, आर्थिक रूप से पिछड़े तबके को हाशिये पर ढकेल दिया। जिस पुलिस और सरकार पर जनता को बेहतर ज़िंदगी और अवसर देने की जिम्मेदारी थी, वही पुलिस और सरकार जनता के ख़िलाफ़ बर्बरता पर उतर आई है। ऐसे में हम नागरिकों का कर्तव्य है कि हम उन कमज़ोर लोगों के साथ खड़े हों और उन्हें बताएँ कि समूचा देश उनके साथ खड़ा है। अगर आज हम इनके साथ न खड़े हुए तो विभाजनकारी ताक़तें और मज़बूत होंगी। विभाजन का आधार आज धर्म है, कल जाति, लिंग और पैसे की ताक़त होगी।

सवाल ख़ुद से !!

हम किसी सरकार से नहीं, खुद से पूछे कि हमें बाँट पाना इतना आसान क्यों है ? पूछें कि बँटवारे की इस लड़ाई में कौन जीता था सत्तर साल पहले और आज किसकी जीत के लिए हम एक दूसरे के खिलाफ खड़े हो रहे हैं? हम पूछें कि हम कब तक रोजी रोटी की जगह बँटवारे की राजनीति होने देंगे ? कब तक हमें बाँटने वाली ताक़तें हमारे संसाधनों को, जिन पर पूरे देश का हक है, अमीर पूँजीपतियों के हाथ औने-पौने दामों पर बिकती रहेंगी ?

हम अमन बचाने निकले हैं ! आओ हमारे साथ चलो !!

98 साल पहले इसी महीने की बात है जब महात्मा गाँधी ने अंग्रेज़ी राज के खिलाफ शुरू किया असहयोग आंदोलन वापस ले लिया था। चौरी-चौरा में गुस्साई हुई भीड़ ने 23 सिपाहियों को थाने में जिंदा जला दिया था। गाँधी के आंदोलन में हिंसा के लिए कोई जगह नहीं थी। गाँधी की अगुवाई में हमने अपने भीतर के प्रेम, सत्य और अहिंसा के दम पर अंग्रेज़ों को हराया। गाँधी की लड़ाई अंग्रेज़ों के खिलाफ नहीं, झूठ, डर और हिंसा के खिलाफ थी। 98 साल बाद हम उसी चौरी-चौरा से, वैसी ही हिंसा के खिलाफ गाँधी का सिखाया सत्याग्रह शुरू कर रहे हैं। हम दुसरों के दुःख से दुखी होने वाले लोग है। हिंसा और घृणा में भरोसा रखने वाले लोग तो हम कभी नहीं रहे। तो आइये आपसी सौहार्द और भाईचारे का नारा बुलंद किया जाए। जो दबे कुचले, दुखी है, उनका हाथ पकड़ें और उनके कंधे से कंधा मिलाकर "वैष्णव जन तो तेणे कहिये जो पीर पराई जाणे रे" की गाँधी धुन गाएं। साथ ही "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया" का जनघोष करें।

विशेष : नागरिक सत्याग्रह पैदल यात्रा चौरी चौरा गोरखपुर से 2 फरवरी 2020 को शुरू होकर महात्मा गाँधी समाधि स्थल राज घाट नई दिल्ली तक जाएगी। यात्रा से जुड़ने और किसी अन्य प्रकार की जानकारी हेतु निम्न स्रोतों पर सम्पर्क करें।

Nagrik Satyagraha @NagrikSatyagrah www.nagriksatyagrah.in

यात्रा से जुड़ने के लिये इस नम्बर पर मिस कॉल करें! 7428499810

आयोजक : नागरिक सत्याग्रह

9713895923, 9839142224, 7379212760